महामत कहे सुनो साथ जी, जो तुम में बीतक ।
लिखी लोमोफूज में, तुम्हारे ताले हक ॥११९॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! जागनी के कार्य में तुमसे दज्जाल जो कुछ संघर्ष कर रहा है । इसे कुरान में पहले से ही श्री राज जी महाराज ने लिखवा कर महंमद साहब के हाथ से भिजवा दिया था इसलिये इसे अटल समझना ।

(प्रकरण ३९, चौपाई १९६६)

रोहिल्ला खान की सराय में, बैठ किया विचार ।
हमको अब क्या करना, हुकम परवरदिगार ॥१॥

रोहिल्ला खान की सराय में बैठकर श्री जी ने सब सुन्दर साथ के साथ विचार विमर्श किया कि अब श्री राजजी महाराज के हुकम से औरंगजेब के पास आखरूल जमां इमाम मेहंदी के आने का तथा कयामत के निशान जाहिर होने का पैगाम देकर उसकी आत्मा को जगाने के लिए हमें क्या करना चाहिए ।

घरों रजवी खान के, फिरे दिन दस बीस ।
चरचा बात रसूल की, उम्मेद नही जगदीस ॥२॥

रिजवी खान, जो औरंगजेब के दरबार का दीवान था, उसके पास श्री जी ने अपने मोमिनों को भेजा। जो १०-२० दिन तक बराबर जाकर ईमाम मेंहदी तथा महंमद साहब के आने की चर्चा सुनाते रहे ताकि दीवान के माध्यम से हमारी बातें औरंगजेब तक पहुंच जाए । माया का जीव होने के नाते से उससे कोई उम्मीद नहीं जगी कि यह राहे खुदा में कुछ काम करेगा ।

सेख निजाम के घरों, फिरत रहे मास एक ।
बातां को उतारनें, कह दिखाई अनेक ॥३॥

तब शेख निजाम, जो औरंगजेब बादशाह का उस्ताद (राजगुरू) था, उसके पास एक महीने तक अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए जा कर कयामत के जाहिर होने के सम्बन्ध में कुरान के अनेकों प्रमाणों से समझाया लेकिन कोई भी सफलता प्राप्त नहीं हुई ।

इन बात के वास्ते, कछू बात सुने इसलाम ।
और आज उनको ए कही, दुनिया तरफ तमाम ॥४॥

उसके घर जाने का विशेष लक्ष्य यही था कि वह दीने इस्लाम के लक्ष्य के अनुसार कयामत एवं मोमिनों के जाहिर होने की बात सुन ले । जब उसने कुछ भी ध्यान नहीं दिया तो एक दिन मोमिनों ने स्पष्ट रूप से कह दिया कि आप सब दुनियां के ऐशो आराम में पड़े हैं, इसलिए आप धर्म की बात नहीं सुनते हैं।

Nijanand App

सेख बाजिद एक फकीर, सुना ए निगाह रखे इत ।
दस बेर उनके गये, बात सुने क्यामत ॥५॥

मोमिनों को पता चला कि एक शेख वाजिद फकीर है जिसका ध्यान खुदा में लगा हुआ है । १० दिन तक उसके घर गए ताकि वह कयामत की बातों को सुने ।

करी सोहबत सागर मल्ल सों, घरों गये दस बेर ।
चरचा सुनाई बीतक, पर हुआ न आगे जेर ॥६॥

मोमिनों ने सागर मल से भी सोहबत की । १० दिन तक उसके घर गए । उसको भी उन्होंने परमधाम की चर्चा एवं ब्रह्मसृष्टियों के अवतरण की लीला का वृत्तान्त कह सुनाया परन्तु अधिक अभिमानी होने के कारण उसने उनकी किसी भी बात पर ध्यान नहीं दिया ।

पर इनकी सोहबत से, गये बखतावर के घर ।
तहां जाय चरचा करी, सुनावने के खातर ॥७॥

परन्तु सागर मल की पहचान से अपने सुन्दरसाथ बख्तावर के घर गये । वहां भी अखण्ड परमधाम की चर्चा तथा ईमाम मेंहदी एवं मोमिनों के आने का ज्ञान सुनाने क़ा प्रयास किया ।

यों और कई जागा, फिरे घर घर कहने को ।
पर ईमान बोय बिना, क्या करे तिन सों ॥८॥

इस प्रकार मोमिनों ने अनेक घरों में विशेष-विशेष लोगों को जाकर सन्देश दिया परन्तु सूने दिल वाली मुरदार दुनियां, जिसमें परमात्मा के प्रति निष्ठा एवं विश्वास की बू ही न हो तो वह धर्म का कार्य क्या करती और ऐसे लोगों को कहा भी क्या जा सकता था ?

तब करके बैठक, करनें लगे विचार ।
ए पोहरा दज्जाल का, कोई होवे न खबरदार ॥९॥

तब मोमिनों ने मिल कर विचार विमर्श किया कि परमात्मा के प्रति मुनकरी अर्थात् दज्जाल का तानाशाही शासन चल रहा है । ऐसे में खुदा के नाम की आवाज सुनने वाला कोई दिखाई नहीं देता ।

फरज आपन ऊपर है, पहुंचावने पैगाम ।
जो कोई ईमान ल्यावहीं, सो दाखिल होए इसलाम ॥१०॥

कयामत और ईमाम मेंहदी के जाहिर होने का संदेश देने के कार्य की जिम्मेदारी अपने पर है । जो आखरूल जमां ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी की बातों पर विश्वास करेगा, वह ही श्री निजानन्द सम्प्रदाय पर समर्पित हो सकेगा ।

Nijanand App

तिस वास्ते पैगाम को, पहुंचावना जरूर ।
नलुवा लिख पहुंचाइये, तब ए सुने मजकूर ॥११॥

इस पैगाम को पहुंचाने के कार्य का हुकम, जो हमें हुआ है, उसका हमें अवश्य ही पालन करना है। इसलिए ये सब हकीकत यदि पत्रियों में लिख कर औरंगजेब के दरबारियों तक पहुंचायी जाए तो हमारी बात औरंगजेब तक पहुंच जायेगी ।

पास रोहिल्लाखान के, रहे मास चार ।
चांदनी चौक में आये के, करने लगे विचार ॥१२॥

सराय रोहिल्ला में ४ महिने रहने के पश्चात् चांदनी चौक में आकर औरंगजेब के पास पैगाम पहुंचाने के लिये श्री जी अपने सुन्दरसाथ के साथ विचार विमर्श करने लगे ।

तहां सेती आए के, रहे हवेली दुलीचन्द के ।
भया सोर सराबा उतहीं, टरे उन हवेली से ॥१३॥

चांदनी चौक में आकर दुलीचन्द की हवेली में वे रहने लगे । यहां बैठकर जब कुरान के विषय पर चर्चा होने लगी तो दुलीचन्द के शोर शराबा करने के कारण वह हवेली भी खाली करनी पड़ी ।

तब इत दज्जाल ने, गुलबा किया अति जोर ।
काहूं रहने न देवहीं, बहुत करने लगा सोर ॥१४॥

धर्म से मुनकरी, झूटी माया से प्यार के ऐसे कलियुगी पहरे में श्री जी यदि हिन्दुओं के पास जाते हैं तो कुरान की चर्चा सुन कर वे विरोध करते हैं तथा मुसलमान लोग हिन्दी भाषा और हिन्दुओं वाला भेष देख कर विरोध करते हैं । उन्हें कोई बैठने को स्थान नही देता था । सब लोग श्री जी के प्रति उल्टा विचार करते हैं ।

बैठे जाय एक ठौर, करने लगे परियान ।
अब कासिद भेजिये, इनको दीजे निसान ॥१५॥

तब चांदनी चौक के सामने एक पेड़ के नीचे बैठ कर सब सुन्दरसाथ के साथ विचार विमर्श किया कि अब औरंगजेब के निकटतम दरबारियों के पास पत्र के द्वारा आखरूल जमां ईमाम मेंहदी के आने तथा कयामत के निशान जाहिर होने की हकीकत लिख कर भेजनी चाहिए ।

बैठे एकान्त एक ठौर, पांच किये समार ।
नलुये पाँच बनाए के, हाजिर किये तैयार ॥१६॥

उस एकान्त स्थान पर बैठ कर पांच पत्र (नलुये) लिखकर तैयार किये गये, जिसमें अग्यारहवीं सदी की सब हकीकत की बातें लिखी गई । उसको मोमिनों ने श्री जी के चरणों में लाकर रखा ।

Nijanand App

हकीकत कयामत की, और पहिचान इमाम ।
हजरत ईसा आइया, हकीकत दीन इसलाम ॥१७॥

कयामत के सातों निशानों की हकीकत का वर्णन तथा ईमाम मेहंदी के स्वरूप की पहचान और उनके जाहिर होने की सब बातें, ईसा रूह अल्लाह (धनी श्री देवचन्द्र जी) का जाहिर होना तथा दीने इस्लाम अर्थात् श्री निजानन्द सम्प्रदाय की हकीकत उसमें लिखी गयी ।

असराफील • जबराईल, उतरे अरस से ।
और लड़ाई दज्जाल की, सब लिखी उन में ॥१८॥

जबराईल श्री राजजी के जोश का फरिश्ता है तथा असराफील जाग्रत बुद्धि का फरिश्ता है । ये दोनों अर्श से उतरे हैं और जो कुरान में लिखा है कि जब ईसा रूह अल्लाह जाहिर होंगे तो दज्जाल उनसे लड़ेगा, वह कुरान की सब हकीकत भी उसमें लिख कर भेजी ।

आजूज माजूज जाहिर, उगा सूर मगरब ।
दाभा हुई जाहिर, ए सब लिखे सबब ॥१९॥

आजूज-माजूज, जिनको दिन-रात कहा है, का जाहिर होना, पश्चिम से सूर्य का उगना, जो मुसलमानों के लिए अंधेरा ही रहेगा अर्थात् अल्लाह तआला का हिन्दुओं के तन में आना तथा दाभ-तूल-अर्ज जानवर जिसका शरीर मनुष्य का, छाती शेर जैसी, आंखें सुअर जैसी, कान हाथी जैसे और सिर पर पहाड़ी बैल के सींग और गर्दन मुर्गे जैसी तथा पीठ गीदड़ जैसी दुर्बल होगी । ऐसे जानवर की हकीकत पत्र में लिखकर भेजी ।

राह सरातल मुस्तकीम, रसूलें करी सरत ।
सो सबै आये मिले, फरदा रोज क्यामत ॥२०॥

अखण्ड परमधाम तक का वह मार्ग जो आज तक किसी को पता नही था, उसे ईमाम मेंहदी आकर बतायेंगे तथा रसूल साहब भी अग्यारहवीं सदी आखिरी जमाने में आखरूल जमां ईमाम मेंहदी के अन्दर प्रगट होकर पूरा काम करेंगे । यह सब बेवरा लिखकर भेजा ।

इन भाँत की हकीकत, ए होए एक दीन इसलाम ।
इन सेती काफर फिरे, रखे रब्बानी कलाम ॥२१॥

यह सब बातें पत्र में प्रमाण देकर लिखी गयी ताकि सारा संसार एक पारब्रह्म की पहचान करके एक ही सत्य धर्म श्री निजानन्द सम्प्रदाय पर समर्पित हो । महंमद साहब के कुरान में बताये हुए इन सातों निशानों की हकीकत को पढ़कर भी जो ईमान नहीं लायेगा, उसी को कुरान में काफिर कहा गया है ।

Nijanand App

कुरान हदीसों की साहिदी, देके लिखे बनाए ।
वास्ते फरज उतारने, ए पहुंचाओ जाए ॥२२॥

कुरान और हदीसों की गवाहियां देकर इन पत्रों को भली भांति तैयार किया गया और श्री जी ने मोमिनों को हुकम दिया कि अपना फर्ज उतारने के लिये ये पांचों पत्र पांचों को पहुंचा दो ।

कानजी को कासिद कर, नलुये दिये हाथ ।
केतिक और सामिल किये, रहियो इनके साथ ॥२३॥

कान्ह जी भाई को इन पांचों पत्रों को पहुंचाने का कार्य सौंपा गया । कुछ सुन्दरसाथ को उनकी सुरक्षा हेतु पीछे-पीछे भेजा ।

एक नलुआ सेख इसलाम पर, दूजा रजवी खान ।
तीसरा सेख निजाम पर, ए किनको होए पहिचान ॥२४॥

एक पत्र शेख इस्लाम, जो सुप्रीम कोर्ट (उच्चतम न्यायालय) का जज और शरीयत का सबसे बड़ा काजी था, उसके नाम था । दूसरा पत्र रिजवी खान, जो औरंगजेब के दरबार का दीवान था, उसके लिए था । शेख निजाम, जो औरंगजेब बादशाह का राजगुरू (उस्ताद) था, तीसरा पत्र उसके लिए था ताकि इनमें से किसी को भी इन बातों की पहचान हो जाय ।

चौथा आकिलखान को, पाँचमा सीदी पोलाद ।
खबर करो तुम इनको, लिखी तुम्हारी बुनियाद ॥२५॥

चौथा पत्र आकिल खान, जो कुरान का सबसे बड़ा उस्ताद था, उसके लिए था । पांचवा पत्र सीदी पौलाद के लिये था, जो शहर का सबसे बड़ा कोतवाल था । कुरान में कही हुई कयामत एवं ईमाम मेंहदी के जाहिर होने की हकीकत की सूचना इन पत्रों में लिखी गयी कि आपके ही अर्श अजीम और अल्लाह तआला की बातें, जो आपके इस्लाम धर्म की असल बुनियाद हैं, वे लिखी हैं ।

काजी ने नलुआ लिया, पूछी फकीर की बात ।
कहाँ फकीर रहत हैं, कौन तुम्हारी जात ॥२६॥

काजी शेख इसलाम ने रूक्का लिया और जिस फकीर ने यह पत्र भेजा है, उसका पता ठिकाना पूछा तथा कान्ह जी से यह भी पूछा कि तुम कौन हो ? हिन्दू या मुसलमान ?

हम कासिद पेटारथू, करें खिजमत अपने अरथ ।
हम मेहनत तिनकी करें, गाँठ से छोड़के देवें ग्रथ ॥२७॥

तब कान्ह जी ने उत्तर दिया कि मैं तो पैसे लेकर चिट्ठियां पहुंचाने का काम करता हूं तथा अपने पेट के वास्ते ही यह काम करता हूं । मैं फकीर के पत्रों का काम करता हूं क्योंकि वह मुझको इस मेहनत के बदले में पैसे देता है ।

Nijanand App

पहाड़ से भेजा फकीर नें, तुम्हें पहुंचावने पैगाम ।
कहूया और भी काहू पर, के मुझ ही पर इस ठाम ॥२८॥

तब कान्ह जी ने कहा कि वह फकीर उधर पहाड़ में रहते हैं । उन्होंने हमें आपके पास पत्र देने के लिए भेजा है । तब काजी ने कान्ह जी से पूछा कि ऐसे पत्र किसी और के भी नाम हैं या केवल मेरे लिए ही ऐसा पत्र लाए हो ।

कही चार नलुये और हैं, तिनके लिये नाम ।
तिनके डेरे जात हों, पहुंचावने पैगाम ॥२९॥

तब कान्ह जी ने उत्तर दिया कि इस तरह के चार और पत्र मेरे पास हैं । उनके नाम मैं आपको बताता हूं । वे नाम शेख निजाम, रिजवी खान, आकिल खान तथा सीदी पौलाद हैं । उनको पत्र पहुंचाने के लिये उनके पास जाता हूं ।

तब काजी रजा दई, ले के जाओ तुम ।
तिनका जवाब ल्याओ, कैसा होत हुकम ॥३०॥

तब काजी ने कहा कि तुम जल्दी जाकर उनको पत्र पहुंचाओ तथा उनसे जवाब लेकर आना । देखें कि वे क्या उत्तर देते हैं । अल्लाह तआला जैसा चाहेंगे वैसा ही होगा ।

कानजी उहाँ से चले, द्वार आया सेख निजाम ।
नलुआ पहुंचाया अन्दर, हम आये ले करो काम ॥३१॥

वहां से चल कर कान्ह जी शेख निजाम के घर आए और घर के अन्दर पत्र भेजा तथा यह कहा कि मैं ईमाम मेंहदी का सन्देशा ले कर आया हूं । इस पत्र का कृपया उत्तर देकर मेरे काम को पूरा कीजिए।

सेख निजाम बुलाय के, पूछी हकीकत ।
तुमको किनने भेजिया, लिख के दौर कयामत ॥३२॥

शेख निजाम ने कान्ह जी भाई को अन्दर बुला कर सब हकीकत पूछी कि तुमको कयामत के समय के सब निशान लिख कर मेरे पास किसने भेजा है ।

तब जवाब दिया कानजीयें, हमको भेजा फकीर ।
सैयद महम्मद इबन इसलाम, बैठा गोसे एक तीर ॥३३॥

तब कान्ह जी ने उत्तर दिया कि मुझ को एक फकीर ने भेजा है । वह अपने आपको हजरत मुहम्मद इब्न इस्लाम (इस्लाम धर्म का प्रवर्तक) मानते हैं और वह शहर के बाहर एकान्त में बैठे हैं ।

Nijanand App

और भी काहू के कागद, के लिखे हमहीं पर ।
तब जवाब दिया कानजीयें, हैं पांचों ऊपर ॥३४॥

शेख निजाम ने पूछा कि किसी और के नाम से भी पत्र लाये हो या केवल मेरे ही लिए है । तब कान्ह जी ने उत्तर दिया कि ऐसे पत्र पांच लोगों के नाम से लिखे गये हैं ।

नाम कह दिखाये तिनके, एक दिया काजी इसलाम ।
अब मैं जात औरों घरों, पहुंचावने पैगाम ॥३५॥

उन सबके नाम बताते हुए कान्ह जी भाई ने कहा कि एक पत्र शेख इस्लाम काजी को दे आया हूं। अब दूसरों के घर भी पत्र देने के लिए जा रहा हूं ।

तब सेख निजाम ने, दिया एह जवाब ।
पहुंचाओ सिताबी तिनको, मिल बिदा करें सिताब ॥३६॥

तब शेख निजाम ने कहा कि तुम शीघ्र ही बाकी पत्र दे आओ, फिर हम पांचों मिल कर इस पत्र का उत्तर देकर तुम्हें विदा करेंगे ।

गया आकिल खान के इहाँ, उन किया इनकार ।
न मेरा नाम नलुए पर, हुआ न खबरदार ॥३७॥

तब कान्ह जी आकिल खान, जिसको कुरान का उस्ताद होने का बड़ा अभिमान था उसके पास गए। उसने पत्र लेने से इन्कार कर दिया और कहा कि इस पत्र पर मेरा नाम ही नहीं लिखा है । खुदा की बातें सुनकर भी वह सावचेत नहीं हुआ ।

फेर दिया नलुये को, लिखी लानत जिन ।
वास्ते बहुत पढ़े के, मोहर लिखी कानन ॥३८॥

आकिल खान ने पत्र लौटा दिया । वक्त आखिरत के आलम फाजल लोग अपने अभिमान में आकर खुदा की बातों पर यकीन नही लायेंगे । ऐसे लोगों को कुरान में लानत (धिक्कार) लिखी है । ऐसे लोगों के कानों पर मोहर लगी रहेगी । वे किसी की अच्छी बात नहीं सुनेंगे ।

गया रजवी खान के, नलुआ दिया हाथ ।
उनने खबर पूछी तिनकी, केते नलुये तेरे साथ ॥३९॥

रजवी खान के पास जाकर पत्र उसके हाथ में दिया । उसने भी पूछा कि तुम कितने लोगों के लिए ऐसे पत्र ले आये हो ।

Nijanand App

तब कान जी भाई ने कहया, पहुंचाये चार पैगाम ।
रह्या एक सीदी पोलाद का, जात हों तिस ठाम ॥४०॥

तब कान्ह जी ने उत्तर दिया कि मैं चार जगह जाकर यह पत्र दे आया हूं । एक पत्र सीदी पौलाद का शेष है । अब उसके घर भी जाता हूं ।

तब जवाब इननें दिया, पहुंचाय के आओ तुम ।
हम भी जवाब देएंगे, जैसा होवे हुकम ॥४१॥

तब रिजवी खान ने उत्तर दिया कि यह पत्र भी तुम पहुंचा आओ । अल्लाह ताला का जैसा हुक्म होगा, वैसे ही मैं इस पत्र का उत्तर दूंगा ।

वहां सेती चलके, आए सीदी पोलाद के घर ।
नलुआ दिया हाथ में, सारी कही खबर ॥४२॥

वहां से चल कर कान्ह जी भाई सीदी पौलाद के घर आये और उनको पत्र दिया, साथ ही साथ बाकी चार पत्रों की खबर कह सुनाई ।

सुनों इनका उत्तर, मैं पाऊं सिताब ।
तब कहया सीदीयनें, औरों लेओ जवाब ॥४३॥

तब कान्ह जी ने सीदी पौलाद से कहा कि ए हजूर ! मेरी बात सुनिए । इस पत्र में लिखी बातों का कृपया जल्दी जवाब देना । तब सीदी पौलाद ने कहा कि पहले और लोगों से जवाब ले आओ ।

पाँचों पैगाम पहुंचाए के, आए मिले मोमिन ।
सारों की खबर के, बीतक कहे वचन ॥४४॥

पाँचों जगह पत्र पहुंचा कर कान्ह जी भाई वापिस लौट आये । जो सुन्दरसाथ पीछे-पीछे आ रहे थे उनसे मिले और पत्रों के देने की सारी हकीकत कह सुनाई ।

ए हकीकत लेए के, दौड़े पासे श्री राज ।
कही सारी बीतक, जो गुजरी है आज ॥४५॥

पत्र पहुंचाने की कुल हकीकत का बेवरा सुनाने के लिए वे श्री जी के चरणों में आए । जिस तरह कान्ह जी भाई ने पत्र दिया था और लेते समय उन्होंने क्या-क्या कहा वे सारी बातें उन्होंने कह सुनाई।

Nijanand App

फेर सवारे पहर में, कान जी फिरा सबन ।
एक डारे दूसरे पर, जवाब न दिया किन ॥४६॥

दूसरे दिन प्रातः काल कान्ह जी भाई उत्तर लेने के लिए सभी के घर गए किन्तु किसी ने भी उत्तर नही दिया बल्कि उत्तर देने की जिम्मेदारी एक दूसरे पर डालते रहे ।

यों करते सबन के, फिरे पन्द्रह दिन ।
बोए ईमान है नहीं, बिना खास मोमिन ॥४७॥

१५ दिन तक कान्ह जी भाई इन सब के घर पत्र के उत्तर पाने के लिए भटकते रहे । मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) के बिना खुदा पर ईमान किसी के अंदर भी उस समय नजर नही आता था । इसलिए किसी ने भी पत्र का जवाब नहीं दिया ।

जाए झुका सेख निजाम के इहां, मोहे देयो जवाब ।
तब जवाब इनने दिया, ए काम नाहीं सिताब ॥४८॥

एक दिन शेख निजाम, जो औरंगजेब का उस्ताद था, उसके घर कान्ह जी भाई ने जाकर नम्रतापूर्वक कहा कि आप मुझे पत्र का उत्तर अवश्य दीजिए । तब उसने उत्तर दिया कि यह काम जल्दबाजी का नहीं है ।

ए तो इमामत का, दावा ल्याये तुम ।
ए तो काम सुलतान का, क्या जवाब देवें हम ॥४९॥

शेख निजाम ने कहा कि यह तो खुदा के जाहिर होने के अर्थात् ईमाम की इमामत की बात के दावे को लेकर तुम आये हो । इस बात का उत्तर देने का अधिकार बादशाह को ही है, हम इस पत्र का उत्तर क्या दें ।

हम सब मिलके, एक ठौर करें जवाब ।
इत कै खलक मिलेगी, न होवे काम सिताब ॥५०॥

हम पाँचों मिल कर इकट्ठे बैठ कर जवाब लिखेंगे । ईमाम की इमामत की बात सुनने और समझने के लिए इस्लाम धर्म के अनेकों लोग इकट्ठे होंगे तभी फैसला हो सकेगा । तभी इस पत्र का जवाब बन पायेगा । यह कार्य इतनी शीघ्रता का नहीं है ।

गया काजी के घरे, किया जवाब तलब ।
ना होवे काम एक मुझसे, जो मैं जवाब करों अब ॥५१॥

तब कान्ह जी भाई शेख इस्लाम के घर गए तथा पत्र का जवाब देने के लिए विनती की । शेख इस्लाम ने कहा कि इस पत्र का उत्तर देना मेरे अकेले के वश का नहीं है । मैं अकेले इसका उत्तर कैसे दे दूं ।

Nijanand App

बात बड़ी ल्याये तुम, ए मुकदमा कयामत ।
मैं पढ़त पढ़त आजिज भया, डारा कागद तित ॥५२॥

यह तो बहुत महत्वपूर्ण बात है । कयामत के समय का दावा लेकर तुम आये हो । मैं पत्र को पढ़-पढ़ कर परेशान हो गया हूं । जब मुझे कुछ भी समझ में नही आया तो मैंने पत्र को एक तरफ रख दिया है ।

हम पांचों इकट्ठे मिलके, देवेंगे उत्तर ।
तब तुम फकीर को, जाए के देओ खबर ॥५३॥

हम पांचों इकट्ठे मिल कर जब बैठेंगे तब इन पत्रों का उत्तर लिखेंगे । तब तुम फकीर के पास जा कर सारा समाचार दे देना ।

सीदी पोलाद के घरों, जाए के पहुंचे तित ।
तलब करी जवाब की, मुझे फकीर न देवे मेहनत ॥५४॥

तब कान्ह जी भाई सीदी पौलाद के घर गये और नम्रतापूर्वक उससे कहे कि आप तो मुझे पत्र का उत्तर अवश्य दीजिए । मैं एक गरीब आदमी हूं । जब तक मैं उत्तर नही ले जाऊंगा तब तक वह फकीर मुझे पैसे नही देगा ।

सीदी ने जवाब दिया, ए काजी मुल्ला का काम ।
मैं क्या जानों कुरान की, हकीकत दीन इसलाम ॥५५॥

सीदी पौलाद ने उत्तर दिया कि यह कार्य तो काजी और मुल्लाओं का है । मैं तो पुलिस का कोतवाल हूं । कुरान में लिखी हुई इस्लाम की हकीकत के बारे में मैं एक शब्द भी नहीं जानता हूं ।

तब जवाब कान जी नें, तुम खबर करो सुलतान ।
ओ आपहीं जवाब देवेंगे, उन्हें सब पहिचान ॥५६॥

तब कान्ह जी ने कहा कि आप इन पत्रों की खबर बादशाह तक पहुंचा दीजिये । उसे इन सब बातों की जानकारी है । वह खुद पत्र का उत्तर दे देगा ।

कहया हमारा बुता नही, बात न निकसे मुख ।
भूल चूक बचन कहें, तो बड़े पावें दुख ॥५७॥

तब सीदी पौलाद ने कहा कि उनके सामने जा कर इस विषय पर बात करने की हमारे पास हिम्मत कहां है ? यदि उनके सामने कोई बात भूल चूक से निकल गई तो हमको बहुत से दुःख सहने पड़ेंगे ।

Nijanand App

तहां सेती फेर के, गया रजबी खान ।
तहां जाए जवाब को, पुकारा देओ दीवान ॥५८॥

तब कान्ह जी भाई रिजवी खान के घर गये और कहा कि हे दीवान साहब ! मेरे पत्र का उत्तर दीजिए।

मैं तुम पर ल्याइया, सादी के बचन ।
तुम सुन अपनें दिल में, करो खुसाली मन ॥५९॥

मैं आपके पास ईमाम मेंहदी साहिब के जाहिर होने तथा कयामत की खुशखबरी लेकर आया हूं । इस बात को सुनकर आपको खुशी होनी चाहिए ।

तब जवाब इन दिया, क्या सादी करें हम ।
आज ही कयामत ल्याया, चाहिये मारया तुम ॥६०॥

तब दीवान रिजवी खान ने उत्तर दिया कि हम क्या खुशी मनायें ? तुम तो आज ही कयामत का संदेश लेकर आये हो । तुमको तो मार देना चाहिए ।

अजूं हमारे दिल में, रहे दुनियां की उम्मेद ।
जोरू लड़के घर की, छूट जात सब कैद ॥६१॥

अभी तो हमारे दिल में संसार का सुख भोगने की चाहना बाकी है । तुम्हारी कयामत की बात के अनुसार परिवार के, पत्नी, पुत्र, आदि के सब बन्धन ही छूट जाएंगे ।

हम कछु कहत हैं, लिख देओ दो कलमें ।
तो हम जायें फकीर पे, रूजू होवे तिन सें ॥६२॥

तब कान्ह जी भाई ने कहा कि आप हमसे जो कुछ कह रहे हैं । कृपया आप यही दो शब्द लिखकर दे दीजिये । मैं उसे फकीर को दे दूंगा तथा उनसे अपनी मेहनत के पैसे ले लूंगा ।

एह बात पांचन की, नही अकेले मेरा काम ।
ऐह बड़ा मुकदमा, काम दीन इसलाम ॥६३॥

तब रिजवी खान ने कहा कि जिस बात का उत्तर पांच आदमियों से मांगा गया है, उसका उत्तर देना मुझ अकेले की हिम्मत से बाहर की बात है और ये तो कयामत के जाहिर होने की बहुत बड़ी बात है जो इस्लाम धर्म को मानने वाले सब लोगों की बात है ।

Nijanand App

इन भांत आजिज होए के, आया पास श्री राज ।
जवाब कोई न देवहीं, बहुत फिरा इन काज ॥६४॥

इस प्रकार सबके घर चक्कर काटने के पश्चात लाचार होकर कान्ह जी भाई श्री जी के पास आए और कहा कि हे धनी ! मैंने उत्तर लेने के लिए हर तरह से प्रयास किया है किन्तु कोई भी उत्तर देने का साहस नहीं करता ।

महामत कहें सुनो मोमिनों, ए नलुओं की बीतक ।
अब कहों आगे परियान की, कहों सो हकीकत ॥६५॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! यह नलुओं (पत्रों) को पहुंचाने की हकीकत आपको सुनाई है । अब फिर सब सुन्दरसाथ ने जो आपस में विचार विमर्श किया, उसे कहता हूं ।

(प्रकरण ४०, चौपाई २०३१)

रामचन्द्र वकील के, फिरे कोईक दिन ।
चरचा सुनाई बहुतक, ना देखा अंकूर मोमिन ॥१॥

दिल्ली में एक रामचन्द्र वकील रहते थे । उसके घर कई दिन तक गए । उसे जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से परमधाम और अक्षरातीत की चर्चा सुनाई परन्तु उसमें ब्रह्मसृष्टि का कोई भी अंकूर नजर नही आया ।

उधोव दास गोड़िया, बड़ा भाई गंगा राम ।
दोए दिन सेवा करी, उत पाया विसराम ॥२॥

उद्धव दास गोड़िया, जो गंगा राम का बड़ा भाई था, चर्चा सुन कर उसने दो दिन तक सेवा की । उसको संसार के सुखों में ही शान्ति मालूम होती थी ।

सुन्दरी एक सन्यासिन, मिली रेती में आए ।
दीदार कर पीछे फिरी, और नजरों न आया ताए ॥३॥

सुन्दरी नाम की एक सन्यासिनी थी । वह स्वामी जी से यमुना जी के किनारे मिली । वह उनके दर्शन करके लौट गई । उसे श्री जी के स्वरूप की पहचान न हो सकी ।

मास दोए नलुओं मिने, किया गुजरान इत ।
पहुंचावनें पैगाम को, दावत जो कयामत ॥४॥

नलुओं के द्वारा कयामत के जाहिर होने तथा ईमाम मेंहदी के अग्यारहवीं सदी में आने का सन्देश और कुरान की हकीकत औरंगजेब तक पहुंचा कर उसकी आत्मा को जगाने के प्रयास में यहीं पर दो महीने व्यतीत हो गए ।

Nijanand App